।। ओ३म्।।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के 86वें बलिदान दिवस पर शत्-शत् नमन

वर्ष 36, अंक 6 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 17 दिसम्बर, 2012 से 23 दिसम्बर , 2012

विक्रमी सम्वत् 2069 दयानन्दाब्द : 188

सृष्टि सम्वत् 1960853113 वार्षिक : 250 रुपये

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

Website:www.aryamahasammelan.com पृष्ठ 1 से 8 तक

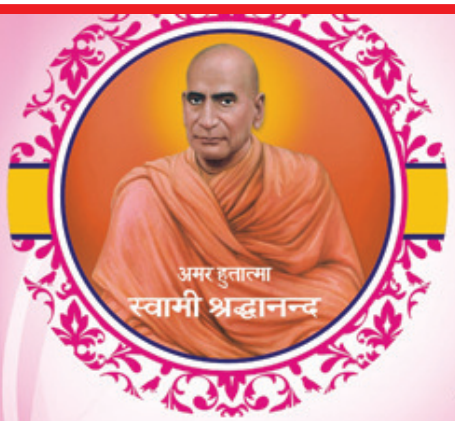

86 वां स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह

शोभायात्रा

मंगलवार, 25 दिसम्बर, 2012

यज्ञ प्रात: 8.00 से 9.30 बजे तक

स्थान :- स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार, दिल्ली

विशाल शोभा यात्रा का प्रारम्भ प्रात: 10 बजे

विशाल सार्वजनिक सभा

समय : दोपहर 1.00 से 4.00 बजे तक

स्थान : रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली -2

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर हजारों की संख्या में पहुंचकर संगठन का परिचय दें।

(नोट : अपने वाहनों को पीली कोठी की ओर से लाने में आपको सुविधा होगी।)

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2012 दिल्ली

व्यवस्थाओं के लिए गठित विभिन्न समितियों के दिल्ली के कार्यकताओं का अभिनन्दन समारोह भव्यता के साथ सम्पन्न

समारोह में सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी एवं सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सेनापति डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती जी का सार्वजनिक अभिनन्दन एवं स्वागत किया गया।

विस्तृत विवरण पृष्ठ 4 पर

वेद-स्वाध्याय

इन्द्र निरपराधी पर क्रोध नहीं करता

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

को नु मर्या अमिथितः सखा सखायमब्रवीत्। जहा को अस्मदीषते।। ऋ.8/45/37।।

अर्थ – (मर्याः) हे मनुष्यो। (कः नु) कौन (सखा) मित्र (अमिथितः) बिना अपराध, बिना कारण (सखायम्) अपने मित्र पर दोषारोपण करता है (जहा कः) कौन निरपराधी मारा गया? (कः) कौन (अस्मत्) हमसे (ईषते) दूर भागता है?

मन्त्र का अभिप्राय स्पष्ट हो जाये इसके लिये इससे पहले के दो मन्त्रों को समझना आवश्यक है–

मा न एकस्मिन्नागसि मा द्वयोरुत त्रिषु। वधीर्मा शूर भूरिषु।। ऋ.8.45.34।

हे न्यायकारी परमेश्वर। हम निर्बल जन हैं। जाने–अनजाने हमसे अपराध हो ही जाता है। आप दयालु हैं इसलिये हमारे एक,दो तीन या बहुत सारे अपराध होने पर भी हमें दण्डित मत कीजिये।

बिभया हि त्वावत उग्रादभि प्रभङ्गिणः। दस्मादहमृतीषहः।। ऋ.8.45.35।।

हे न्यायधीश! आपकी न्याय व्यवस्था अटल है। जिसके कारण मैं भयभीत हो रहा हूँ। आप पापियों के प्रति उग्र हैं अर्थात् उन्हें अवश्यमेव दण्डित करते हैं। दृष्टों का दमन करने वाले हैं। आप सभी विघ्नों को सहन कर रहे हैं परन्तु कभी तो उन विघ्न करने वालों को दण्ड मिलेगा ही।

मैं यद्यपि आपसे भयभीत हुआ पापकर्मो से सर्वथा दूर रहता हूँ। फिर भी यदि अनजाने में कोई अपराध मुझ से हो जाये तो आप उसे क्षमा कर देना। मैं आपसे यही याचना कर रहा हूँ।

परमेश्वर भक्त की इस याचना को सुन उसे आश्वासित करता हुआ कर रहा है – हे भक्त। भला विचार तो करो। क्या कोई मित्र बिना अपराध के अपने मित्र पर क्रोध करता है अथवा दोषारोपण करता है? जहा **कः** मैंने किस निरपराधी को मारा है। **कः अस्मदीषते** हमसे दूर कौन भागता है अर्थात् कोई भी नहीं।

मर्या उस मनुष्य का नाम है जो मर्यादाओं का पालन करे। मर्यादा वे सीमा रेखायें हैं जिनका अतिक्रमण करने पर पाप का भागी होना पड़ता है। जो पाप करेगा वह उसका फल भी पायेगा इसमें कोई दो मत नहीं। हिंसा, चोरी और परस्त्री गमन यह तीन शरीर से किये जाने वाले पाप हैं। चुगली करना,कठोर बोलना, झूठ बोलना और बक–बक करना चार वाणी के पाप हैं। किसी को मारने का विचार, किसी की धन सम्पत्ति पर गिद्ध दृष्टि और नास्तिकता ये तीन मन के पाप हैं। इसके अतिरिक्त ब्रह्म हत्या,भ्रूण हत्या, चोरी करना, व्यभिचार, मद्यपान, पाप करके झूठ बोलना और बुरे कर्मो को बार–बार करना ये सात मर्यादायें यास्क ने निरुक्त में बतलाई हैं जिन्हें छू लेने पर पाप का भागी होना पड़ता है। जो इन मर्यादाओं का अतिक्रमण नहीं करता जीवन के आधार परब्रह्म को प्राप्त होता है।

जिसने कोई पाप नहीं किया और मर्यादित रहा उसे फिर डरने की आवश्यकता ही क्या है। डरना उसे चाहिये जो अपराधी हो और दण्ड से बचना चाहता है। कई बार किसी प्रभावशाली नवीन व्यक्तित्व को देख कर भी बोलने का साहस नहीं होता परन्तु यदि वह एक बार हिम्मत करके अपनी बात को कहना प्रारम्भ कर देता है तो सतत बोलता ही चला जाता है। जिसका साथी स्वयं परमेश्वर हो और अपना जीवन शुद्ध पवित्र है तो फिर किसी से भयभीत होने की आवश्यकता ही नहीं है।

हे प्रभो। तुम मेरे मित्र भी हो। **इन्द्रस्य युज्यः सखा** अन्य साथी आपत्ति आने पर साथ छोड़ जाते हैं परन्तु एक सच्चा मित्र ऐसा व्यवहार नहीं करता जैसे कि एक कहानी सुनी जाती है। दो मित्र घनघोर जंगल से गुजर रहे थे। उनके सामने भालू प्रकट हुआ जिसे देख एक मित्र अपने साथी की चिन्ता न कर वृक्ष पर चढ़ गया। दूसरे ने श्वास को रोक लिया और मृतक के समान भूमि पर लेट गया। भालू ने उस सूंघा और मृतक जान छोड़कर चला गया। उसके चले जाने के पश्चात् पहला मित्र नीचे उतरा और दूसरे से पूछने लगा– भालू आपके कान में क्या कह रहा था। उसने उत्तर दिया भालू मुझसे यह बोला '**विपति कसौटी जो कसे सोई साचो मीत**' जो आपत्ति में काम आये वही सच्चा मित्र है।

भक्त की बात सुन ईश्वर उसे प्रेरणा देते हुये कहता है – जहा **कः** मैंने किसको मारा है? व्यक्ति अपने पाप कर्मो से ही मारा जाता है। जो मेरी प्रेरणा को सुन कर भी आत्मा के विरुद्ध आचरण करते हैं उन्हें मरा हुआ ही समझना चाहिये। जो मुझसे मित्रता कर लेता है वह फिर किसी से भयभीत होता ही नहीं। डरता वह है जो अपराधी है। मेरा भक्त सदैव मुझको सर्वत्र देखता हुआ पाप से पृथक रहता है। सभी प्राणियों में वह मुझे देख सब से मित्रवत व्यवहार करता है। उसके मन से वैर भाव निकल जाता है और दूसरे प्राणी भी उससे डरते नहीं हैं और अपनी हिंसा वृत्ति को त्याग देते हैं।

हमसे दूर कौन भागता है यह भी सुनो। जैसे कुत्ता भोजनशाला में घुसकर रोटी को मुख में दबाकर दौड़ लगाता है क्योंकि उसे भय है कि घर का स्वामी यदि आ गया तो मुझे मार लगेगी। इसी भांति जिन्हें कुसंग का ज्वर चढ़ा हुआ है उन्हें अच्छी बातें भी कड़वी लगती हैं और वे आध्यात्मिक चर्चा से दूर भागते हैं। अथवा जिसने अपराध किया है, उसके दण्ड से बचने के लिये वह लोगों की दृष्टि से छिपते–छिपते हैं। अपराध करने वाला जब किन्हीं दो व्यक्तियों को देखता है तो यही सोचता है कि ये मेरे विषय में ही बातें कर रहे हैं और वह उनसे बचकर चलता है। हे सौम्य। तुम मेरे प्रिय भक्त हो। तुम्हारा उज्ज्वल चरित्र है। तुमने किसी का अनिष्ट नहीं किया तो फिर मुझसे भयभीत होने की बात ही क्या है। यदि पापी भी मेरी शरण में आ जाये तो मैं उद्धार करता हूँ। इसलिये तुम निर्भय हो जाओ। *– क्रमशः*

महर्षि देव दयानन्द का कृतित्व और व्यक्तित्व : जर्मन साहित्यकार कवयित्री ए. क्रिसेटाइन एलबर्स की दृष्टि में

महर्षि देव दयानन्द के कृतित्व और व्यक्तित्व पर भारत में अनेक चिन्तकों, समाजसेवियों, साहित्यकारों और दार्शनिकों ने लेखनी चलाई है। लेकिन विदेशी विद्वानों और दार्शनिकों ने क्या लिखा और कहा है, बहुत कम लोगों को ज्ञात है। जर्मन साहित्यकार कवयित्री ए. क्रिसेटाइन एलबर्स ने महर्षि के कृतित्व और व्यक्तित्व को भावपूर्ण कविता में ढाला है। ज्ञातव्य है, महर्षि से सन्दर्भित ऐसी कविताएँ अभी तक भारत में नहीं लिखी गईं, इससे इन कविताओं का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। इसका काव्यानुवाद वेद-विचारक और नवयोग के प्रतिस्थापक डॉ. ज्ञानचन्द्रजी ने किया है। यह श्रद्धात्मक काव्य अत्यन्त श्रद्धा के साथ धारावाहिक रूप में दिया जा रहा है। आर्य महानुभाव इसे बहुत ही श्रद्धा और भक्तिभाव से परिपूर्ण होकर ही पढ़ें। प्रस्तुत सातवे धारावाहिक का अंग्रेजी भाग पिछले अंक में प्रकाशित किया गया था, इस भाग में उसका हिन्दी काव्यानुवाद प्रकाशित किया जा रहा है। इसमें महर्षि को 'एक सत्यान्वेषी के रूप में' चित्रित किया गया है। -अखिलेश आर्येन्दु

स्वामी दयानन्द सरस्वती का सत्यान्वेषण

वह था स्वर्णिम विहान जब वह नर विदा हुआ,
परिव्रजन हेतु आगे निज आत्मान्वेषण को,
सत्य को प्राप्त करने जिसमें अन्यान्य मनुज मिमिया जाते
मनु–पुत्रों में वह महाकाय, केसरी सदृश उर था जिसका।
कुछ भी न देखने से छोड़ा, पाटली भोर की आत्मा को
पथ को आलोक मान करते, जो विजन पंथ दिशि ले जाता
वे जहां गुलाब विकचते हैं, जो कभी नहीं धुँधले पड़ते
पर जहाँ पंथ हैं चट्टानी, अरु व्यर्थ–द्रव्य, कांटे भी हैं
आत्मा थी उसकी सुदृढ़, युवा–जीवन की उच्च पराकाष्ठा
देखती प्रमादी व्यर्थ–धार, द्रुतगति से उड़ते वर्षों की,
पर उसे पता था विदा–स्वस्ति, अन्तर में जहाँ अश्रु ही थे
उन्मुक्त प्रभात का हुआ सार्वकालिक वैभव उस समय वहाँ
फिर भी उस पथ पर महदात्मा वे सहमे नहीं न झिझके ही
संधान सत्य अज्ञात–गूढ़ का करने के निमित्त निश्चल,
मांगा न कभी सुकुमार करों का स्पर्श, न कृपापूर्ण सुवचन
परवाह न की पगडण्डी पर शोणित–रंजित पद–चिन्हों की।
हो गई आज प्रारम्भ मुदा उसकी आत्मा की व्रत–यात्रा
"मैं केवल सत्य अधिकृत हूँ" ऐसा था उसका आत्मघोष,
अरु सत्य–दिशा की ओर सदा वह बढ़ता जाता था अनथक
पावन तीर्थों का भ्रमण किया, पावन मंदिर आश्रम देखे,
जो ज्ञानवान, विज्ञात्मा थे, ऐसे मनुजों का संग किया।
जिनसे जब भी वह मिला सभी ने उसे प्रेम भरपूर दिया,
वे सब जन उसकी दृढ़ आत्मा को लखकर विस्मत होते थे,
ऐसा भी एक मिला जिसने निज राज्य उसे देना चाहा,
उसका था विस्तृत आश्रम–मठ अरु निधि समृद्धि थी साथ वहां
लेकिन उसने तो पीठ फेर ली उस पद–शक्ति समुच्चय से।
इस तरह वर्ष पन्द्रह तक यात्राओं में काल व्यतीत किया,
आत्मिक–प्रज्ञा से पूर्ण महानात्माओं से मिलते–जुलते
उन सबने उसको अपनी विद्या और ज्ञान का दान दिया
फिर यहीं उसे, उन लोगों ने वह गौरवशाली नाम दिया
वह महन्नाम कि जिससे वह संसार जानता है उसको–

स्वामी दयानन्द सरस्वती

अब भी विश्राम बिना करते वह परिव्रजन में लगा रहा,
संतत आगे बढ़ते एवं अपना संधान कार्य करते,
अविरल, निश्चल, अनथक अपने निश्चित पथ पर चलते–चलते
ऋतुओं के संतत परिवर्तन, संचार न कर पाते भय का
कटु–शीत, कर्क–संक्रांति काल का सदा सामना करता था,
उसके निमित्त तो ये ऐसा था जैसे मानों जून मास।
सब ओर बिछा–बिखरा था उसके श्वेतावरण पाशविक–सा
सारा प्रदेश–विस्तार शीतमय तथा झिलमिल सा जैसे,
मानों तरंग से रहित सिंधु निर्मित हो मर–मर प्रस्तर से।
निस्तब्ध मौन की विस्तृत चादर में निज स्वप्नों में अविरत
हिमगिरि के शिखर समक्ष वहाँ स्थिर थे तनिक दूर पर वे,
फैले थे सूर्य विचुंबित हिम से भरे हुए सब ओर वहाँ
अव्यर्थ हुए अनुभूत सभी सौन्दर्य दयानन्दात्मा को
"प्रकृति का अपना हृदय सदा कल्मष विहीन ही होता है"
अपनी सौन्दर्य–चारुता में निसर्ग सतत है पुण्यात्मा
मैं इन्हीं चारु श्वेताभायुत परिपंथों पर चलता जाऊँ
यद्यपि सदा है मूल्य यहाँ शोणित से भरे हुए पद तल
जब तक यह भारत वर्ष जननि निज शुचि परिधान पुनः पहने,
पा जाय पुनः अपनी उन्नति के शिखरों के शुभ दिशा–पंथ"।
थे यह विचार–भाव अनुपम जो आगे उसे बढ़ाते थे,
ऐसी ही भीष्म प्रतिज्ञा थी उस महदात्मा की निरुपमेय
हा ! पुनः मर्म–भेदी कठोरताएँ जीवन की थीं सम्मुख
पथ–पर्वतीय, संकरे –सूने, सब ओर तुहिन से ढके हुए
काटता हुआ तीखा, तुषार अरु रौद्र, उफनता सरितांचल
टूटे हिम खण्डों से पूरित, एवं सुतीक्ष्ण उत्तर समीर
संत्रासक तीव्र बुभुक्षा अरु तन पर जर्जर अत्यल्प वस्त्र
पर फिर भी वह अतिशूर, निडर, साहसी चरितनायक महान
प्रायः अचेत बेसुध था पर कर गया पार उस सरिता को।
शीताहत था, प्यासा था वह, स्तब्ध चेतनाहीन वहाँ
पर शव समान धीरे–धीरे वह पगडण्डी पर चलता था।
अन्ततः उसे मिल गया एक विश्रामधाम–सा, लघु गृह–सा
कुछ दयावान् जन थे, स्वागत उन सबने उसका किया वहाँ,
करुणामय हाथों ने उसकी सेवा की अरु सुख पहुँचाया
उसकी निज शक्ति पुनः लौटी, वह जीवन ओर हुआ उन्मुख।

– क्रमशः

वेदों का त्रैतवाद : वैदिक दर्शन का मूल प्रतिपाद्य विषय

- गौरी शंकर भारद्वाज

ईश्वर,जीवात्मा और प्रकृति के परस्पर सम्बन्ध को लेकर अनेक दर्शनों का प्रतिपादन किया गया है। कोई विचारक इनमें से एक को, कोई दो को तथा कोई तीन को सर्वोत्तम शक्ति सम्पन्न एवं स्वतन्त्र सत्ता मानता है।

प्रमुख रूप से सम्पूर्ण दर्शन को दो श्रेणियों – अस्तिकवाद तथा नास्तिकवाद में विभाजित किया जा सकता है :–

अस्तिकवाद की निम्नलिखित धाराएँ प्रचलित हैं।

(क) वेद द्वारा प्रतिपादित – **त्रैतवाद**

(ख) आदि शंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित – अद्वैतवाद

(ग) विष्णु स्वामी व वल्लभाचार्य द्वारा प्रतिपादित – शुद्ध अद्वैतवाद

(घ) रामानुजाचार्य द्वारा प्रतिपादित – विशिष्टाद्वैतवाद

(ङ) माध्वाचार्य द्वारा प्रतिपादित – द्वैताद्वैतवाद

नास्तिकवाद दर्शन के निम्नलिखित तीन प्रमुख रूप प्रचलित हैं।

1. **जैन दर्शन, 2. बौद्व दर्शन, 3. चार्वाक दर्शन**

दर्शन की उक्त सभी धाराओं का सूक्ष्म व गम्भीर विश्लेषण करने पर त्रैतवाद ही युक्तियुक्त एवं प्रमाणिक दर्शन सिद्ध होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वमंतव्यामंतव्य प्रकाश में लिखा है, **अनादि सत्ता तीन है। एक – ईश्वर, द्वितीय – जीव, तृतीय – प्रकृति अर्थात् ये जगत् के कारण हैं। इन्हीं को नित्य भी कहते हैं। जो नित्य पदार्थ हैं, उनके गुण,कर्म,स्वभाव** भी नित्य हैं।

ऋग्वेद के 1–164–20 में त्रैतवाद को स्पष्ट रूप में प्रतिपादित किया गया है कि "**द्वासुपर्णा सयुजा सखायों समानं वृक्षं परि षस्वजाते। तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नयो अभिचाक शीति।।**"

अर्थात् जो ब्रह्म और जीव दोनों चेतना और पालानादि गुणों से सदृश व्याप्य–व्यापक भाव से संयुक्त परस्पर मित्रतायुक्त सनातन अनादि है और वैसा ही अनादि मूलरूप कारण और धारण रूप कार्ययुक्त वृक्ष अर्थात जो स्थूल होकर प्रलय में छिन्न–छिन्न हो जाता है वह तीसरा अनादि पदार्थ है इन तीनों के गुण, कर्म व स्वभाव भी अनादि है। इन जीव और ब्रह्म में से एक जो जीव है वह इस वृक्ष रूप संसार में पाप–पुण्य फलों का अच्छे प्रकार भोक्ता है और दूसरा जो परमेश्वर है व कर्मी के फलों को न भोक्ता हुआ चारों ओर अर्थात् भीतर बाहर सर्वत्र प्रकाशमान हो रहा है। जीव से ईश्वर,ईश्वर से जीव और दोनों प्रकृति से भिन्न स्वरूप अंकित तीनों अनादि है।" भावार्थ – एक प्रकृति रूपी वृक्ष पर दो पक्षी (जीवात्मा और परमात्मा) बैठे हैं उनमें से एक (जीवात्मा) उसके फलों का भोग कर रहा है, जबकि दूसरा बिना भोगे उसका निरीक्षण कर रहा है।

इन तीनों अनादि सत्ताओं में **प्रकृति** केवल सत् (अस्तित्वान),जीव – सत् और चित् (चेतन) तथा **ईश्वर सत, आनन्द** (सच्चिदानन्द) हैं। इस प्रकार जीव में आनन्द का भाव है, जो ईश्वरोपासना द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

ईश्वर

जन्माद्यस्य यतः" शारीरिकसूत्र अध्याय – 1 सूत्र –2। अर्थात् ईश्वर जिससे इस जगत् का जन्म,स्थिति और प्रलय होते हैं, वही ब्रह्म जानने योग्य है।

ईशावास्यमिदं सर्व यत्किच जगत्यांचगत्। तेन त्यक्तेन मुंजीथा मागृधः कस्य स्विद्धनम्।। यजु 40/

अर्थात हे मनुष्य! जो कुछ इस संसार में जगत् है, उस सब में व्याप्त होकर जो नियन्ता है, वह ईश्वर कहलाता है। उस से डर कर तू अन्याय से किसी के धन की आकांक्षा मत कर। अन्याय को त्याग और न्यायाचरण रूप धर्म से अपनी आत्मा से त्याग भाव से आनन्द को भोग।

ईश्वर जिसका मुख्य नाम 'ओ३म्' (ओ३म खं ब्रह्म) यर्जु. – 40/1) है, जो सच्चिदानन्द के गुणों से युक्त है। तथा ब्रह्मा, विष्णु, शिव, परमात्मा आदि उसके गुण व कार्य सूचक नाम हैं। जिसके गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं, जो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त सर्व शक्तिमान, दयालु न्यायकारी, सृष्टि का कर्त्ता, धर्त्ता व हर्त्ता है, सब जीवों को कर्मानुसार सत्य, न्यास से फलदाता आदि लक्षणों से युक्त है, उसी को परमेश्वर माना जाता है।

प्रसिद्ध दार्शनिक कान्ट के शब्दों में There must be a supreme being God who will reward virtu with happiness and punish vice pain in a future life.

एक सर्वोच्च सत्ता युक्त परमेश्वर का अस्तित्व है जो भविष्य में जीवन में भलाई को प्रसन्नतापूर्वक पुरस्कृत करता है तथा बुराई को दुःख के साथ दण्डित करता है।

अमेरिका के महान् दार्शनिक व मनोवैज्ञानिक विलियम जेम्स ने तर्क पूर्ण ढंग से ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध करते हुए लिखा है कि कारण और कार्य को एक–दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है। मानव प्राणी के रूप में हम और हमारे चारों ओर का संसार कार्यो का एक समुच्चय ही है और इस कार्य–समूह के पीछे तथा उसकी तह में एक ऐसा अदृश्य मूल आदि कारण है जिसे मैं ईश्वर कहता हूँ। सारी प्रकृति ही निर्धारित नियमों के अनुसार कार्य करती है और उन नियमों का तकाजा है कि कोई नियम–प्रदाता होना चाहिए। जिन मैं परमात्मा कहता हूँ।

प्रारम्भिक काल में यूरोप में वैज्ञानिकों द्वारा ईसाई पंथ के अवैज्ञानिक, प्रकृति–विरुद्ध एवं असत्य अंशो का विरोध करने के फलस्वरूप ईसाई शासकों द्वारा वैज्ञानिक को दण्डित, (प्रताड़ित् करने के

– शेष पृष्ठ 7 पर

आपकी प्रतिक्रिया

अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन : जैसा मैंने देखा

महासम्मेलन में वृहद् यज्ञ व्यवस्था से लेकर समस्त कार्यक्रम अत्यन्त ही अनुशासन पूर्वक थे

श्रीमान् राजसिंह जी आर्य
सम्मेलन संयोजक एवं प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

कोटा जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढा जी के नेतृत्व में करीब 300 आर्य समाजियों का जत्था सम्मेलन में भाग लेने दिल्ली गया था। सम्मेलन स्थल तक पहुँचने के लिए बसों की रेलवे स्टेशनों पर अच्छी व्यवस्था थी। सम्मेलन स्थल पर जनसुविधाएँ, रजिस्ट्रेशन, पर्किंग, चिकित्सा, खोया–पाया, जल–पान, अमानती घर व पण्डाल व्यवस्थाएँ अति रोचक और सुचारु रूप से व्यवस्थित थीं। भोजनशाला भी आर्यवीर दल के आर्यवीरों ने बड़ी अच्छी तरह से संभाल रखी थी। किसी भी प्रकार की कोई परेशानी नहीं हुई। यज्ञशाला चार–चाँद लगा रही थी। मंच–व्यवस्था भी अनोखी छटा बिखेर रही थी। साउण्ड व्यवस्था भी संतोषजनक थी। आर्य समाज भीमगंजमण्डी के सभी पदाधिकारी और सभासद आपके कुशल संयोजन के लिए आपको और आपकी टीम को बधाई देते हैं। अन्त में

"अन्तरराष्ट्रीय महासम्मेलन की, आज हम गाथा गाते हैं।
आनन्द कन्द ऋषि दयानन्द को शीश झुकाते हैं।
भारत के कोने–कोने से हजारों आर्य जन वहाँ आये थे।
पाखण्ड–खण्डिनी ओ३म् ध्वजा वे साथ में लेकर आये थे।
सम्मेलन के मुख्य द्वार को हम शीष झुकाते हैं.... हम गाथा गाते हैं।

– ओमदत्त गुप्त, मंत्री, आर्य समाज भीमगंजमण्डी, कोटा जं. (राज.)

सम्माननीय ब्र. राजसिंह जी
नमस्ते !

महर्षि दयानन्द सरस्वती के आशीर्वाद व असीम अनुकम्पा से अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2012 सफलता पूर्वक पूर्ण हुआ। इस महासम्मेलन में प्रत्येक व्यक्ति की भावना का पूर्ण आदर किया गया। प्रातः कालीन संध्या एवं वृहद् यज्ञ व्यवस्था से लेकर होने वाले समस्त कार्यक्रम अत्यन्त ही अनुशासन पूर्वक थे। महर्षि दयानन्द के आप जैसे अगम्य भक्तों द्वारा की गई व्यवस्था देखते ही बनती थी। प्रत्येक हॉल के कार्यक्रम व गतिविधियाँ अत्यन्त ही सराहनीय थीं। इस अनूठे व अनुपम महासम्मेलन में वैदिक विद्वानों द्वारा वेद की प्रधानता का बखान अत्यन्त ही सरल एवं मधुर शब्दों में किया गया। देश–विदेश से आये देव दयानन्द के भक्तों का उमड़ा जन सैलाब आर्य समाज की महत्ता को प्रदर्शित कर रहा था। आप सभी के अथक प्रयास व पूर्ण सहयोग एवं अर्थ योगदान के बिना यह महासम्मेलन अधूरा था। आपका योगदान अत्यन्त सराहनीय है। इस महासम्मेलन के सफल आयोजन ने सिद्ध कर दिया कि आर्य समाज ही वह समाज है जो देश की एकता व अखण्डता को बनाये रख सकता है। यह सब आप व आप जैसे ऋषि भक्तों के अथक प्रयास एवं पूर्ण संयोजक व परिश्रम का ही फल है। कोटा जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के कर्मठ प्रधान अर्जुनदेव जी चड्ढा के नेतृत्व में गये हम सैकड़ों आर्यसमाजी इस महासम्मेलन में की गई व्यवस्था से अत्यन्त प्रभावित हुए। मेरी ईश्वर से यही कामना है कि इसी तरह हमेशा से आपका मार्ग–दर्शन मिलता रहे एवं आर्य समाज का भारत देश में ही नहीं वरन् विश्व के कोने–कोने में गुणगान हो और आने वाला युग वैदिक युग से जाना जाये।

– हेमेन्द्र विजयवर्गीय, मंत्री, आर्य समाज बारां, (राज0)

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2012 दिल्ली

व्यवस्थाओं के लिए गठित विभिन्न समितियों के दिल्ली के कार्यकताओं का अभिनन्दन समारोह भव्यता के साथ सम्पन्न

प्रत्येक आर्य महानुभाव और आर्य वीर ने महासम्मेलन में जिस प्रकार से अपना योगदान दिया वे सच्चे अर्थों में ऋषि का ही कार्य कर रहे थे - आचार्य बलदेव, प्रधान, सार्वदेशिक सभा

ऐसे कर्मवीर आर्यों से आगे बढ़ेगा आर्य समाज- महाशय धर्मपाल, सम्मेलन स्वागताध्यक्ष

जिस भव्यता के साथ अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन और समापन हुआ था उसी भव्यता के साथ महासम्मेलन की समस्त व्यवस्था समितियों में दिल्ली के कार्यकर्ताओं का अभिनन्दन समारोह रविवार 16 दिसम्बर 2012 को एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबीबाग (पं.) नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का प्रारम्भ यज्ञ के माध्यम से हुआ। उसके उपरान्त आए हुए सभी आर्य विद्वानों, पदाधिकारियों, समस्त व्यवस्था समितियों के कार्यकर्ताओं, सदस्यों और आर्य महानुभावों का स्वागत किया गया। फिर प्रारम्भ हुआ अभिनन्दन समारोह का भव्य कार्यक्रम। ज्ञातव्य है आर्य महासम्मेलन में विभिन्न कार्यो के लिए लगभग 85 व्यवस्था समितियों का निर्माण किया गया था। इन समितियों के द्वारा ही सुचारू रूप से इतना बड़ा आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न किया गया। इन समितियों का ही कमाल था कि महासम्मेलन के एक दिन पूर्व आए भयंकर आधी-तूफान और बरसात के कारण सारी व्यवस्थाओं के बिगड़ने के बावजूद सम्मेलन को सफल बनाने में अपना जी-जान लगा दिया। ऐसे कर्मवीर आर्य महानुभावों के प्रति प्रत्येक आर्य भाई का हृदय सदभावना से भर जाएगा। कर्मवीर आर्य जन समर्पित भाव से बिना किसी लोभ-लालच के कार्य करते हैं। यह दृश्य महासम्मेलन में भी दिखाई दिया। वे किसी अभिनन्दन की आशा नहीं करते हैं, लेकिन वैदिक परम्परा में कर्मवीरों का अभिनन्दन तो होना ही चाहिए। उनके प्रति सद्भावना प्रकट तो करनी ही चाहिए। यह उनके उत्साह के लिए ही आवश्यक नहीं है बल्कि महासम्मेलन के आयोजकों का भी दायित्व था। एक छोटे से कार्यकर्ता से लेकर आयोजन समितियों एवं व्यवस्था समितियों के संयोजकों और अध्यक्षों की भूमिका सराहनीय थी। ऐसे सेवा के अवसर कहाँ मिलते हैं। लेकिन जब मिला तो सभी ने अपना सारा पुरुषार्थ लगाकर बता दिया कि बड़े-से-बड़े आयोजन को किस प्रकार प्राकृतिक आपदा के बावजूद भी बिना किसी परेशानी के कैसे सफलता पूर्वक सम्पन्न कराया जा सकता है।

अभिनन्दन कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए कार्यक्रम के संचालक ब्र. राजसिंह आर्य ने कहा, आज हम उन कर्मवीर आर्य महानुभावों के समर्पण ओर सेवा कार्य करने वाले आर्य महानुभावों का अभिनन्दन करने हेतु इकट्ठे हुए हैं। हमें आए हुए सभी आर्य महानुभावों और आर्य वीरदल तथा आर्य वीरांगना दल के कमवीर कार्यकर्ताओं पर गर्व है जिन्होंने अपने पूरे पुरुषार्थ से ऐसे बड़े कार्यक्रम को सफलता पूर्व सम्पन्न कराया। इससे बड़ी बात यह है कि सभी ने बिना किसी लालच और प्रतिष्ठा के अपनी भूमिका बहुत ही कर्तव्यनिष्ठा के साथ निभाई।

इसके बाद व्यवस्था समितियों के सभी अध्यक्षों, संयोजकों, सदस्यों और कार्यकर्ताओं को एक-एक करके स्मृति चिह्न, ओम-पट् पहनाकर और प्रशस्ति पत्र देकर आचार्य बलदेव जी और महाशयजी के कर कमलों के द्वारा सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर अपना आशीर्वचन देते हुए सार्वदशिक सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी ने कहा, महासम्मेलन को सफल बनाने में आर्य वीरों, आर्य वीरांगनाओं और आर्य महानुभावों के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। इनसे ही आर्य समाज को आगे बढ़ाया जा सकता है। अभिनन्दन समारोह के मुख्य अतिथि और महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी ने अपना आशीर्वाद देते हुए कहा, आर्य समाज का भविष्य उज्ज्वल है क्योंकि अभी भी हजारों की संख्या में कर्मवीर आर्य महानुभाव अपने कर्तव्यों के प्रति सजग हैं।

विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल जी ने कहा, वैसे तो आर्य समाज में अनेक सम्मेलन होते रहते हैं लेकिन अक्टूबर में सम्पन्न महासम्मेलन अपनी तरह का अद्भुत सम्मेलन था। इतने बड़े सम्मेलन में जहां 32 देशों के लोग सम्मिलित हुए की व्यवस्था करना कोई हंसी-खेल नहीं था लेकिन दिल्ली और देशभर के आर्य कर्मवीरों और आर्य महानुभावों ने जिस तरह से पूर्ण समर्पण करके अपना योगदान किया उससे इतना बड़ा असम्भव सा लगने वाला कार्य सम्भव हो सका।

उन्होंने आगे कहा, जिस प्रकार से सर्वादेशिक और दिल्ली सभा ने मिलकर इतना बड़े आयोजन को सफल बनाया वह कभी सफल न होता यदि इतनी बड़ी संख्या में आर्य कर्मवीर और आर्य महानुभाव संकल्प के साथ अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका न निभाते। जितने भी आर्य महानुभावों ने अपना योगदान दिया वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

समारोह में आर्य समाज के व्यवस्था समितियों के कार्यकर्ता आर्य समाजों के कार्य कर्ता और पदाधिकारी, सार्वदेशिक सभा के पदाधिकारी, दिल्ली सभा के व. उपप्रधान श्री धर्मपाल आर्य, दिल्ली सभा के कोषाध्यक्ष श्री अनिल तनेजा, केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री राजीव आर्य व मन्त्री श्री जितेन्द्र बनाती, एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल के प्रबन्धक श्री अरविन्द नागपाल के अतिरिक्त बहुत बड़ी सेख्या में आर्य महानुभाव परिवार सहित बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

स्मृति चिह्न, प्रशस्ति पत्र और ओम्-पट देकर किया गया सभी कार्यकर्ताओं का सम्मान

महासम्मेलन में सेवा कार्यों एवं आर्य वीर दल के माध्यम से महर्षि दयानन्द जी के मन्तव्यों के प्रचार प्रसार के लिए सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान सेनापति डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती जी का हुआ सार्वजनिक अभिनन्दन

सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान श्री सुरेश चन्द्र अगवाल जी ने विशेष रूप से पधारकर दी कार्यकर्ताओं को शुभकामनाएं

परिवार सहित उपस्थित हुए सभी समितियों के कार्यकर्ता

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2012 दिल्ली का सम्मेलन स्थल जहां वेद प्रचार वाहन प्रचार कार्यकरता रहा, वहां खुले मैदान में विभिन्न प्रतियोगिताएं भी सम्पन्न हुई, जिसकी समस्त रिपोर्ट प्रैस मीडिया समिति के कार्यकर्ता विभिन्न दैनिक पत्रों में प्रकाशनार्थ भेजते रहे।

बलिदान दिवस : 23 दिसम्बर पर विशेष

महान धर्म रक्षक, शिक्षाविद्, सदभावना-दूत और क्रान्तिकारी थे स्वामी श्रद्धानन्द

– प्रो. भवानीलाल भारतीय

स्वामी श्रद्धानन्द के सम्बन्ध में आर्य जगत् के ही नहीं बल्कि आर्य समाज से इतर अन्य इतिहास–पुरुषों ने एक कालजयी युग पुरुष कहकर पुकारा है। एक धर्म और मानवता का अद्वितीय दूत किस प्रकार कल्याण के मार्ग पर बढ़ता जाता है, स्वामीजी के जीवन की प्रत्येक घटना इसे बताती है। गाँधी ने तो उन्हें उस समय का सबसे तेजस्वी और निर्भीक योद्धा कहा। इसी प्रकार सरदार पटेल, नेता सुभाष, चन्द्रशेखर आजाद और अन्य सभी देशभक्तों ने उनके कृतित्व और व्यक्तित्व की भूरि–भूरि प्रशंसा की । कहा जाता है, महापुरुषों का जीवन ही उनका सन्देश होता है। स्वामीजी का सारा जीवन इसका ज्वलन्त उदाहरण है। प्रस्तुत लेख आर्य जगत् के प्रसिद्ध गवेषक, लेखक और वक्ता प्रो. भवानीलाल भारतीयजी की पुस्तक से उद्धृत है। आशा है बलिदान दिवस पर प्रस्तुत यह लेख पाठकगणों को पसन्द आएगा।

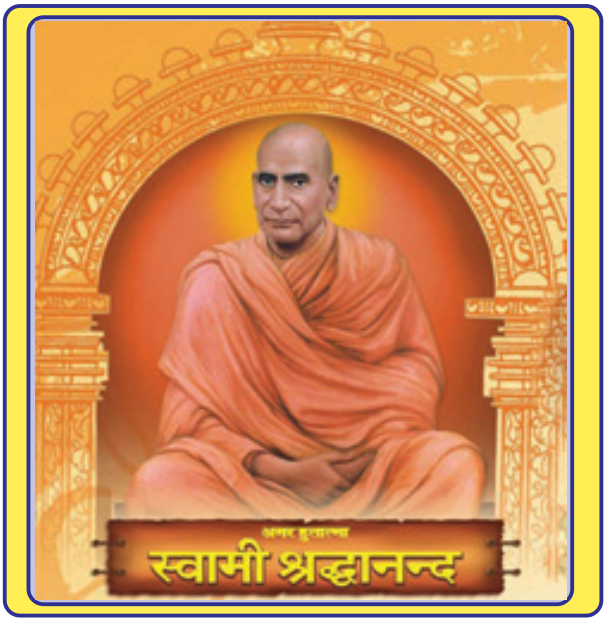

स्वयं को कल्याण मार्ग पर चलने वाला एक पथिक मानने वाले स्वामी श्रद्धानन्द ने जब उसी नाम से अपनी आत्मकथा लिखकर ज्ञानमण्डल काशी से 1924 में प्रकाशित कराई तो साहित्य समीक्षकों की धारणा थी कि हिन्दी में आत्मकथा लेखन का इससे अधिक उत्कृष्ट ग्रन्थ कोई अन्य नहीं है। स्वामी श्रद्धानन्द यद्यपि जालन्धर जिले के तलवन नामक ग्राम में जन्मे थे तथा उनकी मातृभाषा पंजाबी थी, किन्तु वे हिन्दी के सुलेखक, पत्रकार तथा राष्ट्रभाषा के हिमायती नेता भी थे। हिन्दी साहित्य के भागलपुर अधिवेशन में अध्यक्ष पद पर अपना अभिभाषण देते हुए उन्होंने हिन्दी के अखिल भारतीय स्वरूप और उसकी राष्ट्र व्यापी मान्यता का विस्तार पूर्वक उल्लेख किया था। वे सफल पत्रकार भी थे। पहले उन्होंने 'सद्धर्म प्रचारक' साप्ताहिक 1889 में उर्दू में निकाला किन्तु यह अनुभव करने पर कि हिन्दी का माध्यम का पत्र उनके विचारों को अधिक जनता तक पहुँचा सकता है, उन्होंने 1907 में इसे हिन्दी में कर दिया। उन्होंने एक अन्य पत्र साप्ताहिक 'सत्यवादी' 1904 में निकाला तथा 'श्रद्धा' नामक मासिक का प्रकाशन 1920 में किया। अपने राजनीतिक विचारों के प्रसार के लिए उन्होंने अंग्रेजी में 'दि लिबरेटर' नामक पत्र का आरम्भ किया था। यह पत्र दीर्घजीवी नहीं हो सका।

स्वामी श्रद्धानन्द का आरम्भिक जीवन स्वयं उनके लिए भी सन्तोष प्रद नहीं रहा था। वे अपने माता–पिता की लाडली सन्तान थे। बनारस के क्वीन्स कॉलेज में उन्हें अध्ययन करने का अवसर मिला। यद्यपि वे बी.ए तक नहीं पहुँचे, किन्तु पूरोपीय दार्शनिकों के अनीश्वरवादी दर्शन तथा अंग्रेजी के रोमांटिक उपन्यासों के अध्ययन ने उनके मस्तिक में एक विचित्र तूफान पैदा कर दिया था। उनके जीवन में उस समय प्रशान्ति तथा पूर्ण विवेक का आविर्भाव हुआ जब वे 1879 में बरेली में महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में आए और उनसे अपने मन में उठने वाली शंकाओं का समाधान प्राप्त किया। यही उनका वास्तिक जन्म समझना चाहिए।

कालान्तर में वकील के व्यवसाय से जुड़े लाला मुंशीराम का कार्यक्षेत्र पंजाब रहा। वे आर्य समाज के नेता, उपदेशक तथा संगठक थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के रूप में वे न केवल अपने प्रान्त में अपितु सार्वदेशिक स्तर पर सर्वमान्य नेता की भूमिका में आए। स्वयं के स्वाध्याय के बल पर उन्होंने प्रतिद्वन्द्वी पौराणिक पण्डितों को शास्त्रार्थ समर में पटखनी दी और वैदिक धर्म के गौरव की स्थापना की। प्रारम्भ में वे महर्षि दयानन्द की स्मृति में स्थापित डी.ए.वी कॉलेज की प्रबन्ध व्यवस्था में सहयोग देते रहे, किन्तु जब उन्हें यह आभास हुआ कि इस महाविद्यालय में महर्षि दयानन्द के शिक्षा विषयक आदर्शों को पूरा नहीं किया जा सकता, तो उन्होंने पुरातन शिक्षा प्रणाली को पुनरुज्जीवित करते हुए 1902 में गंगा के तटवर्ती बिजनौर जिले के कांगड़ी ग्राम के अंचल में गुरुकुल महाविद्यालय की स्थापना की और मातृभाषा हिन्दी के माध्यम से प्राचीन वैदिक शास्त्रों के साथ–साथ पाश्चात्य ज्ञान–विज्ञान के पठन–पाठन की समुचित व्यवस्था की। देश की स्वाधीनता के लिए किए गए प्रयत्नों में भी स्वामीजी का योगदान कम नहीं था। राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशनों में प्रतिनिधि रूप में सम्मिलित होना तो उन्होंने 19वीं शताब्दी के अन्तिम दशक में ही आरम्भ कर दिया था। गाँधीजी के अफ्रीका में किए गए आन्दोलनों से उनकी सहानुभूति थी और 1914 में महात्माजी के भारत आने पर उनका सर्वप्रथम सार्वजनिक स्वागत और अभिनन्दन गुरुकुल कांगाड़ी में वहाँ के आचार्य महात्मा मुंशीराम ने ही किया था।

पं. गोपाल कृष्ण गोखले, लोकमान्य तिलक, पं. मदनमोहन मालवीय तथा लाला लाजपत राय जैसे देशमान्य नेताओं से उनके आत्मीयतापूर्ण सम्बन्ध आजीवन रहे। जब महात्मा गाँधी जी ने 1920 में असहयोग का प्रवर्तन किया तो स्वामीजी ने उसमें भाग लिया। इस अवसर पर उन्होंने दिल्ली की असहयोगी जनता का नेतृत्व किया। हिन्दू–मुसलिम एकता के प्रबल समर्थक स्वामीजी ने दिल्ली की जामा–मस्जिद की वेदी से मानव जाति की मूलभूत एकता का उपदेश दिया। इससे पूर्व जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड के बाद हुई अमृतसर काँग्रेस में उन्होंने स्वागताध्यक्ष पद को स्वीकार कर देशवासियों को आश्वत किया कि भारतवासी दमन और अत्याचार के आगे झुकने वाले नहीं हैं। कालान्तर में काँग्रेस की मुस्लिम–तोषिणी नीति से असहमत होकर उन्होंने हिन्दू जाति के संगठन, दलितोद्धार तथा विधर्मियों को शुद्धि द्वारा हिन्दू धर्म में पुनः प्रविष्ट कराने के आन्दोलन की गोली के शिकार होकर स्वामीजी ने अमर पद प्राप्त किया।

स्वामी श्रद्धानन्द रचित साहित्य

1916–17 की अवधि में स्वामीजी ने आर्यधर्म ग्रन्थमाला नामक एक ग्रन्थमाला का प्रकाशन किया। इसमें छपे सभी ग्रन्थ स्वयं स्वामीजी के द्वारा लिखे गए थे। इन ग्रन्थों में पादरी लेखक जे.एन फर्कुहर द्वारा आर्य समाज और दयानन्द पर लगाए गए आक्षेपों का उत्तर, पारसी मत और वैदिक धर्म की तुलना तथा मानव धर्म शास्त्र और शासन पद्धति आदि प्रमुख हैं। स्वामीजी 'सद्धर्म प्रचारक' आदि पत्रों में वर्षों तक वेद, उपनिषद् तथा अन्य धर्म ग्रन्थों के अंशों की व्याख्या के साथ प्रकाशित करते रहे थे। बाद में उनके ये धार्मिक प्रवचन 'धर्मोपदेश' शीर्षक से 'स्वाध्याय मंजरी' ग्रन्थमाला के अन्तर्गत प्रकाशित हुए। स्वामीजी ने महर्षि दयानन्द विषयक शोध कार्य किया। 'ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका' के तृतीयांश का उन्होंने उर्दू अनुवाद किया तथा पूना नगर में 1875 में महर्षि दयानन्द द्वारा दिए गए 'उपदेश मंजरी' शीर्षक व्याख्यानों का उर्दू अनुवाद पकाशित किया। 'उपदेश मंजरी' के महत्त्व को उन्होंने विस्तार से रेखांकित किया था।

हिन्दी की भाँति उर्दू ग्रन्थ लिख कर स्वामी श्रद्धानन्द ने इस भाषा को समृद्ध किया। वर्ण–व्यवस्था, क्षात्रधर्म, यज्ञ के मन्त्रों की व्याख्या, अछूतोद्धार, नियोग प्रथा का औचित्य आदि उनके उर्दू ग्रन्थ 'कुलियात संन्यासी' शीर्षक से छपे थे। पौराणिक पण्डित गोपीनाथ द्वारा 'सद्धर्म प्रचारक' के सम्पादक व प्रकाशक पर चलाए गए मानहानि के मुकदमों के विवरण को उन्होंने उर्दू में छपवाया तथा 'दुखी दिल की पुरदर्द दास्ताँ' लिखकर आर्य समाज विषयक अपने अनुभवों को व्यक्त किया। हिन्दू मुस्लिम इत्तिहाद की कहानी, अन्धा इत्तहाद, और खुफिया जिहाद, तथा मुहम्मदी साजिश का इन्कशाफ आदि उनकी उर्दू कृतियाँ तत्कालीन साम्प्रदायिक मनोवृत्ति वाले लोगों का पर्दाफाश करती हैं।

अंग्रेजी भाषा पर स्वामीजी का असाधारण अधिकार था। the future of the Arya samaj, Hindu Sanghatham, Saviour of the Dying Nation आदि उनकी अंग्रेजी की प्रमुख कृतियाँ हैं। Inside Congres उन राजनीतिक लेखों का संग्रह है जो उन्होंने काँग्रेस में रहकर की गई देश सेवा तथा तज्जन्य कड़वे–मीठे अनुभवों से सम्बन्धित हैं। The Arya samaj and its Detractors, A Vindication में पटियाला में आर्य समाजियों पर चलाए गए उस अभियोग का विस्तृत वर्णन है जो उस रियासत के राजा ने ब्रिटिश नौकरशाहों के कहने में आकर चलाया था। यह ग्रन्थ आचार्य रामदेव के सहलेखन में लिखा गया था। तत्कालीन गोरी सरकार के प्रति आर्य समाज की नीति को इस ग्रन्थ में सतर्क ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

कार्यक्रम सम्पन्न — आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज हनुमान रोड, नईदिल्ली का 90 वाँ वार्षिकोत्सव 3 दिसम्बर से 9 दिसम्बर2012 तक धूमधाम और आनन्द के वातावरण में सम्पन्न हो गया। इस अवसर वर वृहद यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसके ब्रह्मा आचार्य राजू वैज्ञानिक और ऋत्विक डॉ. कर्णदेव शास्त्रीजी थे। प्रात:कालीन सत्र में पं.सतीश सत्यम् जी अपने मधुर भजनों के द्वारा श्रोताओं को कर्तव्य–पथ पर चलने की प्रेरणा देते रहे। सायं कालीन सत्र में आचार्य राजू वैज्ञानिक ने मानव जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त करने का सुगम वैदिक मार्ग, सुखी गृहस्थ जीवन, योग का वास्तिवक स्वरूप क्या है आदि विषयों पर गहन चर्चा की। इस अवसर पर 4 दिसम्बर को आर्य महिला सम्मेलन का वृहद आयोजन किया गया, जिसमें आर्य महिलाओं ने महिलाओं की स्थिति तथा महर्षि दयानन्द का महिलाओं के प्रति किए गए युगान्तकारी कार्य के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किए।

उत्सव में 8 दिसम्बर को दिल्ली के विभिन्न स्कूलों और गुरुकुलों के छात्र–छात्राओं की भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न हुई, जिसका विषय था 'मानव मात्र के कल्याणार्थ वेद'। जिसमें प्रथम स्थान कु.राधिका, कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर, नईदिल्ली, द्वितीय स्थान अभिषेक, डीएवी पब्लिक स्कूल रोहिणी और तृतीय स्थान उत्कर्ष, डीएवी पब्लिक स्कूल, दयानन्द विहार, नर्दिल्ली को प्राप्त हुआ। उत्सव का समापन 9 दिसम्बर को वृहद पूर्णाहुति यज्ञ के साथ हुआ। पूर्णाहुति के अवसर पर आर्य विदुषी डॉ. पवित्रा विद्यालंकार और आर्य विद्वान डॉ. धर्मेन्द्र कुमार ने सन्तान के श्रेष्ठ संस्कार और उसके चरित्र–निर्माण तथा आचार्य इन्द्रदेवजी ने ईश्वर प्राप्ति के साधन और उपाय विषय पर बहुत ही सारगर्भित विचार व्यक्त किए।

– अरुण प्रकाश वर्मा, मन्त्री

आर्यसमाज सान्ताक्रुज का स्थापना दिवस एवं पुरस्कार समारोह

आर्य समाज सान्ताक्रुज का 69वाँ स्थापना दिवस एवं पुरस्कार समारोह 25 नवम्बर2012 को आर्य समाज के विशाल सभागृह में धूमधाम के साथ सम्पन्न हो गया। यज्ञ के ब्रह्मा पं. नामदेव आर्य और मुख्य यज्ञमान के रूप में डॉ. सत्यपाल सिंहजी (पुलिस आयुक्त मुम्बई) थे। स्थापना दिवस और पुरस्कार समारोह की अध्यक्षता श्री चन्द्र गुप्त आर्य जी ने की। पुरस्कारों में स्व. झाऊलाल शर्मा गुरुकुल पुरस्कार कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून को, श्रीमती भागीरथी शर्मा छाबरिया गुरुकुल सहायता पुरस्कार श्री कृष्ण देवालय गुरुकुल गोमत को, श्रीमती कृष्ण गान्धी आर्य युवक पुरस्कार ब्र. रणजीत विवित्सु (उड़ीसा) को, श्रीमती प्रेमलता सहगल युवा महिला पुरस्कार आचार्या पवित्रा विद्यालंकारजी(दिल्ली) को, पं.युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार आचार्य जयकुमार को, श्रीमती लीलावती महाशय आर्य महिला पुरस्कार डॉ. वसुधा शास्त्री (हैदराबाद) को, श्री राजकुमार कोहली वयोवृद्ध विद्वान पुरस्कार पं. प्रेमचन्द्र प्रेम(निजामाबाद) को, स्व.नारायण हासानन्दानी विशिष्ट पुरस्कार स्वामी सुमेधानन्दजी(राजस्थान) को प्रदान किया गया। समस्त कार्यक्रम का संचालन समाज के महामन्त्री श्री संगीत आर्य ने किया। ***– संगीत आर्य, मन्त्री***

आर्य समाज वैदिक आश्रम, अलीगढ़ (उ.प्र.) का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सिविल लाइन्स, वैदिक आश्रम, रामघाट अलीगढ़ का वार्षिकोत्सव 18 से 21 नवम्बर तक हर्षोल्लास और आनन्द के वातावरण में सम्पन्न हो गया। उत्सव में पं.राजपाल शास्त्री व पं. सुरेन्द्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न कराए गए। उत्सव में आर्य जगत् के लेखक और विद्वान आचार्य रूपचन्द्र दीपक जी के प्रवचन और प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. कुलदीप विद्यार्थी के भजनोपदेश हुए। इस अवसर पर नगर प्रभातफेरी द्वारा जन जागरण किया गया और डॉ. पपेन्द्र आर्य व डॉ. के.पी आर्य के संरक्षण में योग शिविर का आयोजन किया गया। उत्सव में स्वास्थ्य शिविर और सत्यार्थ प्रकाश पर स्कूल छात्रों के मध्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। **–डॉ. पपेन्द्र आर्य**

आर्यजन आर्य महासम्मेलन के सन्दर्भ में अपने अनुभव एवं सुझाव भेजें

रोहिणी दिल्ली में 25 से 28 अक्टूबर 2012 में आयोजित अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन धूमधाम के साथ सम्पन्न हो गया। इस ऐतिहासिक सम्मेलन के प्रत्येक आर्य महानुभाव के अपने अनुभव हैं। इसी प्रकार इस सम्मेलन को लेकर अनेक जिज्ञासाएँ होंगी। आप के मन में अनेक सुझाव होंगे। इन सभी को समेटते हुए आर्यजन सम्मेलन के विषय में अपने अनुभव और सुझाव भेजें। इससे सम्मेलन के संयोजकों को जहाँ आगे के सम्मेलनों के लिए प्रेरणा मिलेगी वहीं पर ऐसे सम्मेलन का एक इतिहास भी आप के अनुभवों से निर्मित हो सकता है।

–संयोजक, महासम्मेलन

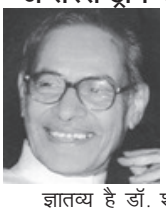

विश्व प्रसिद्ध साहित्यकार पद्मश्री डॉ. श्यामसिंह शशि अन्तरराष्ट्रीय रोमा विश्वविलाय के कुलाधिपति मनोनीत

आर्य समाज और ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त रोमा संस्कृति विशेषज्ञ–नृवैज्ञानिक पद्श्री डॉ. श्यामसिंह शशि को सर्विया रिपब्लिक की राजधानी बेलग्रेट में नवगठित अन्तरराष्ट्रीय रोमा संस्कृति विश्वविद्यालय का अध्यक्ष और कुलाधिपति मनोनीत किया गया है।

ज्ञातव्य है डॉ. शशि को विश्व रोमा पार्लियामेन्ट का सदस्य व शिक्षा आयोग का अध्यक्ष भी मनोनीत किया गया है। आर्य समाज के लिए यह गौरव की बात है कि महर्षि की अमर कृति सत्यार्थ प्रकाश को रोमानी भाषा मेंअनुवाद के लिए विश्वविद्यालय में प्रस्तावित है। आर्य समाज के लिए यह कम गौरव की बात नहीं है कि वे आर्य जगत् के ऐसे अद्वितीय साहित्यकार हैं जिन्होंने हिन्दी और अंग्रेजी में **चार सौ से अधिक पुस्तकों** की रचना की है **–सम्पादक**

आर्य वीरदल बिहार प्रान्त का प्रान्तीय शिविर 25 फरवरी से 3 मार्च2013 तक

आर्य वीरदल बिहार प्रान्त का प्रान्तीय शिविर 25 फरवरी 2013 से 3 मार्च 2013 तक आयोजित किया जा रहा है। शिविर का उद्घाटन सार्वदेशिक आर्य वीरदल के प्रधान स्वामी देवव्रत सरस्वती एवं सार्वदेशिक सभा के प्रधान आचार्य लदेवजी करेंगे। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य वीरांगना की प्रधाना साध्वी उत्तमायतिजी, सार्वदेश्कि सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्यजी, आर्ष गुरुकुल कोलाघाट, बंगाल के आचार्य श्री ब्रह्मदत्तजी, दिल्ली सभा के प्रधान ब्र.राजसिंह आर्यजी, (बिहार प्राप्त के आर्य वीरदल प्रधान पं. व्यासनन्दन, आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार, के प्रधान श्री गंगाप्रसादजी, आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के मन्त्री श्री रमेन्द्र गुप्तजी, सार्व आर्य वीरदल के वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक, श्री हरिसिंह आर्यजी , दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्यजी आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. उपेन्द्र आर्यजी, आर्य वीरदल उ.प्र. के शिक्षक श्री राजेश आर्यजी, आर्य वीरदल के शिक्षक श्री कर्मवीरजी एवं आचार्य सुश्रुतजी इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे।

शिविर में बिहार प्रान्त के सभी आर्य समाजों एवं आर्य संस्थाओं के अधिकारियों से अपील की गई है कि इस विशेष अवसर पर अपने समाज एवं संस्थाओं में कोई भी कार्यक्रम आयोजित न करें और समाज एवं आर्य संस्थाएँ 12 वर्ष से लेकर 25 वर्ष तक के ऊपर के युवाओं को शिविर में भेजें। शिविर में भाग लेने वाले सभी आर्य वीरों को खाकी हाफ पेन्ट, दो सेन्डो बनियान, सफेद मोजे, सफेद जूते, लंगोट, लाठी, कॉपी, पेन टार्च, भोजन पात्र, पहनने और बिछाने के वस्त्र, तोलिया, साबुन, तेल आदि आवश्यक वस्तुएँ साथ अवश्य लाएँ।

विशेष –शिविर से पूर्व श्री सतेन्द आर्य जी द्वारा 1 फरवरी से 24 फरवरी2013 तक विभिन्न ग्रामों में जन–जागरण और वेद कथाओं के कार्यक्रम आयोजित है।

सुयोग्य वर की आवश्यकता

सुशिक्षित आर्य परिवार की दिल्ली निवासिनी 30 वर्षीया कद 5'5' रंग गहुँआ, एम.बी.ए प्रा.कम्पनी में एच.आर. प्रबन्धक पद पर कार्यरत कन्या हेतु सुषिक्षित, कार्यरत आर्य वर की आवश्यकता है जो किसी बड़े शहर का निवासी हो। जाति बन्धन नहीं। सम्पर्क करें –

महेन्द्र कुमार, जी–1/8ए, यूजीएफ अस्पताल कालोनी, उत्तम नगर, नई दिल्ली–59 चलभाष : 09953130878

ई मेल (अणुजाल) matri.soulmate4@gmail.com

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 40 रु.	प्रचारार्थ 25 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

पृष्ठ 3 का शेष

वेदों का त्रैतवाद : वैदिक दर्शन.....

कारण विज्ञान जगत्, धर्म व ईश्वर के अस्तित्व को नकारने लगा किन्तु पूर्ण वैज्ञानिक व सृष्टि नियमों के अनुकूल वैदिक धर्म का ज्ञान होने पर विज्ञान जगत् का धर्म व ईश्वर के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण हो गया। यहाँ हम ईश्वर के अस्तित्व व कार्यो के संबंध में कुछ प्रमुख वैज्ञानिकों के विचार प्रस्तुत करते हैं –

1. संसार के महानतम वैज्ञानिकों में से एक लार्ड कैल्विन ने घोषणा कि कि यदि तुम काफी गम्भीरता से विचार करो तो विज्ञान तुम्हें ईश्वर में विश्वास करने के लिए बाध्य कर देगा।

2. प्रसिद्ध वैज्ञानिक (प्राकृतिक विज्ञानविद) ईविन विलियम नाब्लौक ने दृढ़तापूर्वक कहा कि 'मैं परमात्मा में विश्वास करता हूँ। मैं परमात्मा में इस लिए विश्वास करता हूँ क्योंकि मैं यह नहीं समझता कि केवल 'अकस्मात' को प्रथम इलक्ट्रोन या प्रोटोन या प्रथम परमाणुओं के उदय का कारण माना जा सकता है। मैं परमात्मा में इसलिए विश्वास करता हूँ, क्योंकि चीजें जिस रूप में भी हैं, उनकी तर्क संगत व्याख्या केवल परमात्मा की दिव्य सत्ता को मानकर ही की जा सकती है।

3. जान क्लीवलैंड (गणितज्ञ व रसायन शास्त्री) का कथन है कि हमारा तर्क संगत निष्कर्ष यह है कि न केवल सृष्टि की रचना हुई, प्रत्युत किसी ऐसे पुरुष की इच्छा और योजना के अनुसार सृष्टि की रचना हुई, जिसमें बुद्धि और ज्ञान की पराकाष्ठा थी, जिसमें अपनी योजना के अनुसार सृष्टि को रचने और उसे जारी रखने का सामर्थ्य है और जो सर्वज्ञ और समस्त विश्वभर में उसे लागू कर सकता है। मैं उसी परमपुरुष को परमात्मा कहता हूँ।

4. एडवर्ड लूथर कैसल (जीव विज्ञानविद) का मत है कि हाल ही के वर्षो में जो वैज्ञानिक अनुसंधान हुए हों या हो रहे हैं, वे परमात्मा की सत्ता के परम्परागत दार्शनिक प्रयासों के समर्थन में और नई साक्षी जोड़ रहे हैं। .....यह निश्चित है कि नूतन वैज्ञानिक अविष्कार जो सृष्टिकर्त्ता की आवश्यकता की ओर संकेत करते हैं, परमात्मा की ओर लोगों की प्रवृत्ति को मोड़ने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। यदि सब वैज्ञानिक अपने पूर्वग्रह पक्षपात छोड़कर अपनी भावनाओं पर अपनी बुद्धि का अनुशासन स्वीकार करें तो उन्हें यह स्वीकार करने को बाध्य होना पड़ेगा कि परमात्मा का अस्तित्व हैं मैं पुनः यह दोहराता हूँ कि निष्पक्ष और खुले मन से विज्ञान का अध्ययन मनुष्य को परमात्मा में विश्वास की आवश्यकता की ओर ले जाता है।

महा कवि शंकर ने ईश्वर के स्वरूप व उपासना के विषय में बहुत निम्नलिखित रूप में सुन्दर एवं सार्थक लिखा है :–

माने अवतार तो अनंगता की घोषणा है, अंगहीन सब अंगियों का सिरमौर है।

पूजें प्रतिमा तो विश्व–व्यापक्ता बोलती है, नारायण स्वामी का ठिकाना सब दौर है।।

खोजें घने देवता तो एकता, निषेध करे, एक महादेव कोई दूसरा न और है।

अंत को प्रपंच में ही पाया शुद्ध शंकर को, जो भावना से भिन्न है – श्याम है न गौर है।

जीवात्मा

इच्छाद्वेष प्रयत्न सुख दुःख ज्ञानान्यात्मनो लिहमिति।

न्याय दर्शन 1 – 1 – 10

अर्थात् जिस में इच्छा (राग) द्वेष (वैर) प्रयत्न (पुरूषार्थ) सुख, दुख, ज्ञान – गुण हो। वह जीवात्मा है।

जीवात्मा की विशेषताएँ

1. जीवात्मा एक स्वतंत्र व अनादि सत्ता है।

2. जीवात्मा अल्पज्ञ है। वह ईश्वर की व्यवस्था के अनुसार कर्मो के आधार पर अनेक योनियों में शरीर धारण करती है। अर्थात् जीवात्मा का पुनर्जन्म होता है।

भगवद् गीता में स्पष्ट लिखा है – वासंसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्योति नरोपराणि – तथा शरीरणि विहाय जीर्णोन्यन्यानि संयाति नावानि देही (2/22)।

अर्थात् जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्याग कर नए वस्त्र धारण करता है उसी प्रकार आत्मा पुराने तथा व्यर्थ शरीर को त्यागकर नवीन भौतिक शरीर धारण करता है।"

3. जीव कर्म करने में स्वतंत्र है किन्तु फल भोगने में कर्माधीन है। **अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्** अर्थात् जीव को शुभ–अशुभ कर्मो का फल अवश्य भोगना पड़ता है।

4. जीवात्मा की सर्वश्रेष्ठ योनि मनुष्य जीवन है और मनुष्य योनि के द्वारा ही वह मोक्ष को प्राप्त करता है।

5. जीव का अंतिम लक्ष्य जन्म–मरण के बंधन से मुक्त होकर आनन्दमय परमात्मा को पाना है।

6. निरन्तर अभ्यास और वैराग्य द्वारा मोक्ष को प्राप्त किया जा सकता है।

7. **मुचन्ति पृथग्भवन्ति जनां यस्या** सा **मुक्ति** अर्थात् जिसमें बंधन से छूट जाना हो वह मुक्ति है। जब शुद्ध मन युक्त पांच ज्ञानेन्द्रियाँ जीव के साथ रहती है और बुद्धि का निश्चय स्थिर रहता है, उसको परमगति या मोक्ष कहते हैं। अर्थात् पांच ज्ञानेन्द्रियाँ,पांच सूक्ष्म भूत,मन व बुद्धि– इन 17 तत्त्वों का समुदाय सूक्ष्म शरीर कहलाता है जो (अभौतिक शरीर) मुक्ति में भी साथ रहता है।

मुक्ति के साधन

योगाभ्यास (अष्टांग योग – यम नियम, आसन,प्राणायाम प्रत्याहार,धारणा ध्यान, समाधि), धर्मानुष्ठान, ब्रह्मचर्य से विद्या प्राप्ति, आप्त विद्वानों का संग, सत्याचरण,परोपकार,पुरूषार्थ,पक्षपात रहित न्याय, स्वाध्याय तथा ईश्वरोपासना से मुक्ति प्राप्त होती है।

ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना,उपासना :–

ओ३म् भुर्भव। तत्सवितुर्वरण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धि यो नः प्रयोदयात्।

ऋ0 3/62/10, यजु.– 36/3

अर्थात् हे सर्वशक्तिमान, दुःखनाशक, आनन्दस्वरूप परमेश्वर। आपका सकल विश्व को उत्पन्न करने वाला तथा आत्मा और बुद्धि को कल्याण पथ में प्रेरित करने वाला, जो समस्त पापनाशक सच्चिदानन्द दिव्य स्वरूप है, उसका हम चिन्तन,मनन और ध्यान करते हैं। कृपया आप हमें बुद्धि–धुति–स्मृति से सम्पन्न बनाइए, जिससे हम आपके सच्चिदानन्द स्वरूप का अखण्ड संस्मरण कर सकें।

– शेष अगले अंक में

कार्यक्रम सम्पन्न

पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय स्मृति सम्मान समारोह

आर्य जगत् के महान दार्शनिक, वेदविद्,साहित्यकार व धर्मवेत्ता महापण्डित गंगाप्रसाद उपाध्याय की स्मृति में स्थापित पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय स्मृति पुरस्कार इस वर्ष 11 नवम्बर, 2012 को प्रयाग में आयोजित एक भव्य सम्मान समारोह में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के उप कुलपति प्रो. महावीरजी को दिया गया। पुरस्कार के रूप में ग्यारह हजार रुपये, सम्मृति चिन्ह एवं अंग वस्त्रम् दिया जाता है। इस अवसर पर न्यायमूर्ति श्री ए. के योग, महामहोपध्याय प्रो. महावीरजी, पं. मदनमोहन दिव्य, पं. जागेश्वर आर्य एवं प्रो. ज्वलन्त कुमार शास्त्रीजी के अतिरिक्त बड़ी संख्या में गणमान्य जन उपस्थित थे।

आगामी कार्यक्रम

आर्य समाज राजौरी गार्डन में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

तिथि : 23 दिसम्बर 2012

स्थान : स्वामी श्रद्धानन्द भवन, जे. ब्लाक, राजौरी गार्डेन, नई दिल्ली

संयोजक : जगदीश आर्य एवं वेद प्रचार मण्डल (प.) के अधिकारीगण

आर्य समाज बिड़ला लाइन्स का वार्षिकोत्सव

तिथि : 28 से 30 दिसम्बर 2012

स्थान : आर्य समाज प्रांगण

यज्ञ ब्रह्मा : पं. कुंवरपाल शास्त्री

वक्ता : पं. वेदप्रकाश श्रोत्रिय, श्री धर्मपाल आर्य, श्रीमती उषाकिरण आहूजा, श्रीमती विभा आर्य व श्रीमती उषा किरण कथूरिया

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2012 के कूपनों पर एकत्र की गई राशि शीघ्र भेजें

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के विशाल कार्य पर बहुत अधिक व्यय हुआ है। सभी दान दाताओं एवं दान एकत्र करने वालों से निवेदन है कि वे अपनी राशि तथा कूपनों पर एकत्र की गई राशियाँ कूपन सहित शीघ्रताशीघ्र सभा कार्यालय में भेजें। जो सज्जन महासम्मेलन में अपनी आहुति अभी तक न दे पाए हों उनसे भी निवेदन है कि वे भी अपनी आहुति अवश्य ही भेजें, ताकि महासम्मेलन के कार्यों के बिल भुगतानों में किसी भी प्रकार की असुविधा न हो।

– ब्र0 राजसिंह आर्य, महासम्मेलन संयोजक

अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सी डी उपलब्ध

5 सी डी सेट मात्र 150 रुपये

(डाक व्यय अलग देय होगा)

25,26,27,28+कवि सम्मेलन

आर्य वीर दल व्यायाम प्रदर्शन एवं लेजर शो

पैसा भेजने पर ही सीडी भेजी जा सकेगी अथवा कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।

–: प्राप्त स्थान :–

वैदिक प्रकाशन विभाग, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,

15-हनुमान रोड, नई दिल्ली फोनः 011-23360150,23365959

साप्ताहिक आर्य सन्देश

17 दिसम्बर से 23 दिसम्बर , 2012

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 20 / 21 दिसम्बर –2012

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 19 दिसम्बर, 2012

आर्य डॉ. ओमप्रकाश भटनागर के 85वें जन्म दिवस पर हवन सामग्री सप्रेम भेंट

आर्य सन्देश के सह व्यवस्थापक डॉ. ओमप्रकाश भटनागर के 85वें जन्मदिवस पर (5 जनवरी 2013) दिल्ली की समस्त आर्य समाजों, गुरुकुलों एवं अनाथालयों के लिए, जिनमें दैनिक यज्ञ होता हो, उन्हें 5 किलो हवन सामग्री निःशुल्क 5–14 जनवरी 2013 तक वितरित करने का संकल्प लिया है।

इस अवसर पर लाभ उठाने हेतु संस्थाएँ अपने प्रधान/मन्त्री से हस्ताक्षरित पत्र देकर एवं अपनी संस्था के स्टाक रजिस्टर में लिखाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड से प्राप्त कर सकते हैं। **–सम्पादक**

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर डीडी नेशनल पर वार्ता का प्रसारण

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर 24 दिसम्बर, 2012 को सायं 5 से 6 बजे के मध्य डॉ. महेश विद्यालंकार के वार्ता का प्रसारण होगा।

प्रतिष्ठा में,

श्री.....

ब्रेल लिपि में

महर्षि दयानन्द जीवनी ग्रन्थ उपलब्ध

मात्र 1000/– रु में

आर्यजन अपनी आर्य समाज की ओर से अंध विद्यालयों को भेंट दें।

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने की छोटी सी शुरुआत : कापी–किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 21 स्लिप्स का एक सैट मात्र 10/– रुपये प्रति शीट।

शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित छह सुन्दर डिजाइनों में

मात्र 200/– सैकड़ा

प्राप्ति हेतु संपर्क करें।

–: प्राप्त स्थान : –

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड,नई दिल्ली

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; टैलीफैक्स 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर